

# सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

## स्वमान-में शिव शक्ति हैं।

मैं शिव की शक्ति हूँ... सदा शिव से कम्बाईड हूँ... शिव की सेवा अर्थ ही मैं इस धरा पर अवतरित हुई हूँ...

**योगाभ्यास-** अ. फरिश्ता बनकर ऊपर आना और देवता बनकर नीचे साकार सृष्टि पर आना। यह अभ्यास दिन में अनेक बार करें।

**ब.** अपने सामने खुंटी पर टंगी हुई फरिश्ते व देवता की ड्रेस देखें और कभी फरिश्ते की चमकौली ड्रेस पहनकर उसी स्वरूप का अनुभव करें और कर्मायें...।

**धारणा-** सर्व को सम्मान देना। ऐसे लोगों के नाम की सूची बनायें जिनके लिए आपको मन

में सम्मान नहीं है। सम्मान न होने के कारण का पता लगायें और ज्ञान योगबल से उसका निवारण करते हुए, उनके प्रति अपनी भावनाओं को शुद्ध करें और व्यवहार में उन्हें सम्मान दें। याद रखें, दाता हमेशा बड़ा और महान होता है। इतिहास देने वाले को याद रखता है, लेने वाले को नहीं।

**चिंतन-** बाबा के द्वारा दी गई श्रीमत्तों की सूची बनायें। जैसे-रोज अमृतवेले उठकर याद की यात्रा में बैठना। रोज मुरली सुनना अर्थात् ज्ञानामृत पान करना। मुख से सदा ज्ञान-रत्न ही निकालना। कम, धीरे, मीठा और तोल कर बोलना। भोजन बाबा की याद में बनाना

और खाना। रोज रात को अपना चार्ट लिखना या बाबा को अपना पोतामेल देना... आदि। **ध्यान दें-** जो जितना श्रीमत्ता का पालन करेंगे, उतना ही सर्व शक्तियां उनके आदेश का पालन करेंगी।

**तीव्र पुरुषार्थियों के प्रति-** प्रिय आत्मन! हम इस संसार के आधार हैं। हमारी सम्पूर्णता का प्रकाश ही इस जग से अज्ञान के अंधकार को दूर करेगा, धरा पर स्वर्ग लायेगा और जन-जन को मुक्ति-जीवनमुक्ति प्रदान करेगा। इतने बड़े कार्य के निमित्त हम आत्मायें व्यर्थ में अपना समय और संकल्प कैसे नष्ट कर सकते हैं?

## स्वमान-में विघ्नविनाशक गणेश हैं।

मैंने विघ्नों को नष्ट किया है तब तो विघ्न विनाशक गणेश के रूप में मेरा गायन और पूजन हो रहा है...।

**योगाभ्यास-** अ. भक्त आत्मायें विघ्नों से त्रस्त होकर मेरे पास आ रहे हैं... और मुझ विघ्न विनाशक गणेश के पास आते ही उनके विघ्न नष्ट होते जा रहे हैं। वे मुझसे सुख, शांति व आनंद का वरदान लेकर जा रहे हैं...।

**चिंतन-** विघ्न क्या है और क्यों आते हैं? विघ्नों का निवारण कैसे करें? विघ्नों के समय अपनी स्मृति में रखने के लिए बाबा के पाँच महावाक्य लिखें।

**धारणा-** धैर्यता। विघ्नों के समय विचलित न हों। इधर-उधर मदद को गुहार करते भागते न फिरें। बल्कि धैर्यतापूर्वक ठण्ड दिमाग से उस पर विचार करें, आपको समाधान स्पष्ट दिखाई देगा।

**तीव्र पुरुषार्थियों के प्रति-** अ. प्रिय साधकों! आपके या आपके संबंध-संपर्क में रहने वाली किसी आत्मा के ऊपर यदि कोई विघ्न आ गया हो तो आप इस स्वमान के साथ कि 'मैं विघ्न-विनाशक हूँ' रोज आधे घण्टे एक ही समय और एक ही स्थान पर बैठकर 21 दिन योग करें। आपके विघ्न दूर हो जायेंगे।

**ब.** कर्मक्षेत्र में जाने से पूर्व पाँच मिनट बाबा

के कमरे में बैठकर बाबा से विजय का तिलक लें। इससे आपका हर कार्य बिना किसी विघ्न के खेल-खेल में पूरा हो जायेगा।

**स.** बाबा के महावाक्य हैं- सर्व विघ्नों का एक ही कारण है-बाप से कनेक्शन लूज होना। यदि बाप से कनेक्शन ठीक है तो विघ्न आ नहीं सकते। अतः हम सम्पूर्णता के पथ पर चलने वाले साधक सूक्ष्मता से स्वयं को चेक करें कि किसी गफलत या अवज्ञा के कारण हमारे बुद्धि का कनेक्शन बार-बार टूटता तो नहीं रहता? यदि कनेक्शन टूटा हुआ है तो आप बाबा के सामने बैठें, बाबा मदद करेंगे आपका टूटा हुआ कनेक्शन जोड़ने में।

## कर्म को 'कर्तव्य' - पेज 2 का शेष...

दो कर्मचारी बातें कर रहे थे। एक कर्मचारी ने दूसरे से पूछा - मैंने तो मम्मी को मेडिकल चेक अप के लिए केजुअल छुट्टी लिया है? क्या आप भी छुट्टी पर है? दूसरे कर्मचारी ने कहा - येस, मैंने भी पापा के मेडिकल चेकअप के लिए छुट्टी ली है। लेकिन आपने मम्मी के मेडिकल चेकअप के लिए केजुअल छुट्टी ली है तो मम्मी का मेडिकल चेकअप कराया या नहीं?

प्रथम कर्मचारी ने कहा - मम्मी के चेकअप के लिए तो पापा भी हैं। पापा अभी हट्टु-कट्टु हैं। फिर मुझे जाने को क्या जरूरत है? लेकिन आपने अपने पापा के मेडिकल चेकअप का काम निपटाया या नहीं?

दूसरे कर्मचारी ने हंसते-हंसते कहा - यार आप और मैं दोनों एक ही जैसे हैं। मेरी मम्मी भी तंदरुस्त हैं इसलिए उस जवाबदारी का बोझ मैंने मम्मी पर लाद दिया। मम्मी पापा को लेकर दवाखाने गई है। अपने को तो छुट्टी से मतलब!

केजुअल छुट्टी एक-एक कर भोगनेवाली वृत्ति व्यक्ति को ऐसी बहानेबाजी की ओर प्रेरित करती है। आजादी के बाद देश क्यों असाधारण प्रगति नहीं कर सका? कारण एक ही है, प्रजा और सरकार 'नागरिक धर्म' का कर्तव्य भुनाने में खरे नहीं उतर रहे हैं। कर्म या कर्तव्य को आनंदोत्सव मानने वाले व्यक्ति ही वंदनीय हो सकते हैं। आलसी साधु-संत या तर्कवादी राजनेता नहीं।

कर्म या कर्तव्य श्रद्धा, स्फूर्ति और आनंद पूर्वक किया नहीं जाता तो परिश्रम और प्रमाद उत्पन्न होता। काम में चित्त नहीं जगता और बोरीयत के कारण व्यक्ति क्रोधो बन जाता। परिणाम स्वरूप अशांति और अराजकता का सृजन होता है। काम के प्रति पलायनवादी व्यक्ति को एक खासियत यही होती है कि वे अलबेले होते हैं। काम न करने या नहीं होने के बचाव में खुद सारी शक्ति वेस्ट कर देते हैं। इतना ही नहीं निष्ठापूर्वक कर्तव्य अदा करने वालों को निंदा करने का 'कर्तव्य' व पूरी तरह से अदा करते हैं।

इस आलेख का भाव सार में यही हो सकता है कि आप कर्म को कर्म समझकर करते हैं या कर्तव्य निर्वहन से उपर उठकर उसे प्यार करते हैं। तभी उस कर्म का परिणाम सुकून दायक होगा। आज वर्तमान परिदृश्य इसी तरह का है। इसलिए उन सभी मनुष्यों के पास, जो इस तरह का विचार रखते हैं उन सबके पास सम्बंधों से लेकर स्थूल धन तक का अभाव है। क्योंकि वे परिणामात्मक कर्म करते हैं। उन्हें सिर्फ मतलब है, काम हमारा है ही नहीं बस हमें काम का बोझ उतारना है। इसलिए उन कर्मों की तरंगें जिसे वो बोझ समझते हैं वो उनके जीवन के हर पहलू को प्रभावित करती हैं। गरीब हमेशा गरीब है क्योंकि वह सिर्फ और सिर्फ मेहनत करता है और मजबूरी से करता है। इसलिए सिर्फ बोझ उतारता है और कहता रहता है, क्या करूँ साहब पापी पेट का सवाल है। अब आप बताइए जब पेट ही पापी हो गया तो बचा ही क्या? क्या वो अमीर होगा कभी? खुश रहेगा कभी... जरा सोचिए।



**देहरादून।** उत्तराखण्ड के गवर्नर अजीज कुरैसी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मंजु।



**वैंगलुरु।** रक्षाबंधन के पावन पर्व पर कर्नाटक के मुख्यमंत्री माननीय के.सिद्धारमय्या को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. पदमा। साथ हैं विधायक एन.एल. नरेंद्र बाबू।



**मुंबई-विले पार्ले।** परब कोहली,मॉडल,वी.जे. टेलिविजन तथा फिल्म एक्टर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. योगिनी।



**गाज़ियाबाद।** राखी के पावन पर्व पर संतोष यादव, उपाध्यक्ष,गाज़ियाबाद विकास प्राधिकरण को आत्म स्मृति का तिलक देने के पश्चात् राखी का महत्व बताते हुए ब्र.कु. राजेश। साथ हैं ब्र.कु. सुनीता तथा अन्य।



**केरल-गुज.।** बी.आर.एस. कॉलेज में चार दिवसीय राजयोग शिविर के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. रूपा, ब्र.कु. रिदि, प्रो. पुरोहित साहेब, प्रो. गजेरा साहेब तथा कॉलेज के विद्यार्थीगण।



**रानीखेत-हल्द्वानी।** 'महिला सशक्तिकरण' कार्यक्रम के पश्चात् महिलाओं के साथ समूह चित्र में ब्र.कु. नीलम।



**नाइजीरिया-लागोस।** 'विपम परिस्थितियों में स्वयं को एकरस रखने की विधि' विषय पर प्रवचन के बाद समूह चित्र में ब्र.कु. आत्मप्रकाश, ब्र.कु. रेवा तथा अन्य।